13 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्तव्य

विश्व परिवर्तन का अनुभव

➢➢ विश्व परिवर्तन का अनुभव

➳_➳ मैं आत्मा विश्व कल्याणकारी हूँ, मैं आत्मा विश्व परिवर्तक हूँ

→ मैं आत्मा सदा साक्षी स्वरुप शिव बाबा के कार्य में उनकी सदा की सहयोगी आत्मा हूँ

■ जैसे बाबा विश्व को परिवर्तन करने के लिए निमित है

· वैसे ही मैं आत्मा भी सदा इसी कार्य के निमित हूँ

→ मैं आत्मा सदा सर्व आत्मा के प्रति कल्याण की ही भावना रखती हूँ

■ अब मैं आत्मा स्वयं का परिवर्तन कर

· सारे विश्व का परिवर्तन कर रही हूँ

➢➢ मै परिवर्तनशील आत्मा हूँ

➳_➳ मैं आत्मा स्वयं की हर कमी कमजोरी

→ का परिवर्तन कर रही हूँ

■ मैं आत्मा अब स्वयं की चेकिंग करती हूँ

■ और संकल्प करती हूँ की

· "अब मुझ आत्मा को अपनी वृति स्मृति, स्वभाव, संस्कार, संबंध-सम्पर्क को परिवर्तन करना ही है"

→ संगमयुग पर विशेष खेल ही परिवर्तन का है

■ सर्व शक्ति का आधार परिवर्तन शक्ति है

· पुरुषार्थ में विग्नरुप परिवर्तन की शक्ति की कमी है

· अब मैं आत्मा स्व परिवर्तन कर विश्व का परिवर्तन कर रही हूँ

➳_➳ मुझ आत्मा को अब कहा कहा परिवर्तन करने की आवश्यकता है

→ उसकी मैं आत्मा बहुत ही सूक्ष्म चेकिंग करती हूँ

■ मैं आत्मा कोई भी संकल्प को सेकंड में व्यर्थ से समर्थ में परिवर्तन कर रही हूँ

· मैं आत्मा अब सदा समर्थ संकल्प ही करती हूँ

→ अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को चेक करती हूँ की,

■ मैं आत्मा अब तीव्र पुरुषार्थ करने का द्रढ़ संकल्प करती हु

· और अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को तीव्र करती हूँ

→ मैं आत्मा सेकंड में साकार वतन से पार निराकारी परमधाम की निवासी बनती हूँ

■ यह सभी परिवर्तन शक्ति को मैं आत्मा स्वयं में बढ़ा रही हूँ

 क्युकी, यही एक शक्ति है जिसकी वजह से मैं आत्मा

→ सर्व शक्तिमान बाप और सर्व श्रेष्ठ आत्माओ के समीप जा सकती हूँ

■ अगर यह शक्ति नहीं होगी तो

 मैं आत्मा सदैव हर प्राप्ति से वंचित रहूंगी

→ परिवर्तन करना ही मेरा कार्य है

■ इसी कार्य अर्थ ही मुझ आत्मा को

 यह ब्राह्मण जीवन प्राप्त हुआ है

→ मैं आत्मा स्वयं की पावरफुल वृति और स्मृति से

■ व्यक्ति और प्रकृति को परिवर्तन कर रही हूँ

➢➢ कंबाइंड शिव-शक्ति रुप का अनुभव

➳_➳ मैं आत्मा स्वयं को कभी भी अकेला नहीं समझती हूँ

→ मैं आत्मा स्वयं को सिर्फ शक्ति नही परंतु

■ लेकिन मैं सदा "कंबाइंड शिव-शक्ति रुप" की स्मृति में रहती हूँ

· अपने को फिमेल नही

· लेकिन शिव शक्ति हूँ

· कंबाइंड हूँ इसी नशे में रहती हूँ